International Journal of Hindi Research
www.hindijournal.com
ISSN: 2455-2232
Received: 01-05-2026, Accepted: 01-06-2026, Published: 16-07-2026
Volume 12, Issue 3, 2026, Page No. 14-17

अकेली आवाज उपन्यास में अकेलापन का चित्रण : एक विश्लेषणात्मक अध्ययन।

डॉ. सांटी जोसफ
सह आचार्य, हिंदी विभाग,संत अलोशियस महाविद्यालय, एडत्वा, अलप्पुषा, केरल, भारत
DOI: https://doi.org/10.66856/ijhr.2026.12.3.12184

सारांश
मनुष्य के जीवन का सबसे सुखद काल बचपन होता है। यह माता –पिता और भाई –बहनों के साथ, बिना किसी जिम्मेदारी और तनाव के,हँसते –खेलते बिताने का समय है। पर्याप्त आराम, पौष्टिक आहार,खेलकूद और खुशियों से भरा समय। पाठ्यपुस्तकों का बोझ, होमवर्क का सिरदर्द या सिलेबस का अत्यधिक दबाव न होने का समय। बचपन में हमें जो आदतें मिलती हैं,वही आगे के जीवन में हमारा मार्गदर्शन करती हैं। "अकेली आवाज "में बंटू के कोई भाई –बहन नहीं थे। उसके पिता हमेशा काम में व्यस्त रहते थे। बारह वर्ष की आयु तक वह बिलकुल अकेला रहा। न कोई भाई –बहन,न कोई दोस्त और न ही कोई सहपाठी। इस तरह वह बचपन में पूरी तरह अकेला पड़ गया। चार –पांच साल की उम्र से लेकर बारह साल की उम्र तक केवल एक ही अध्यापिका उसके साथ थीं। उनके आलावा उसने केवल अपनी माँ और कुछ नौकरों को ही देखा और उनसे बातचीत की। यहां तक कि वह सही और गलत के बीच अंतर भी नहीं पहचान पाता था। हालाँकि नीता मिस ने उसे सही और गलत के बारे में बताया था,लेकिन उसमें इसे समझने का विवेक विक्सित नहीं हो पाया। यह भी उसके इसी अकेलेपन का परिणाम है। लेकिन बचपन में उसने जो दोस्ती खोई थी,वह उसे आदर्श विद्यालय में पहुंचने पर मिल जाती है।

मूल शब्दः इकलौता, अनुभवी शिक्षिका, आदर्श विद्यालय, नियमों को लगातार तोड़ना, परेशानियां, अंतर्राष्ट्रीय टूर्नामेंट, कप्तान, जीत

लेखक परिचय: श्री राजेंद्र अवस्थी हिंदी के एक जाने –माने साहित्यकार थे। उनका जन्म 1930 जनवरी 25 को जबलपुर में हुआ था। उन्होंने कादंबरी, सरिता, नवभारत टाइम्स जैसी पत्रिकाओं के संपादक के रूप में कार्य किया। उनकी 60 से अधिक साहित्यिक कृतियां प्रकाशित हुईं, जिनमें कवितायेँ, उपन्यास और यात्रा वृतांत शामिल हैं। 2009 दिसंबर 30 में उनका निधन हो गया। प्रमुख उपन्यासरू सूरज किरण की छांव, जाने कितनी आँखें, जंगल के फूल, मछली बाजार और अकेली आवाज। कहानी संग्रह: मकड़ी के जाले, दो जोड़ी आँखें आदि। काव्य संग्रह रूदोस्तों की दुनिया, एक औरत से इंटरव्यू आदि। यात्रा वृतांत: जंगल से शहर तक। श्री. राजेंद्र अवस्थी का एक बहुत ही प्रसिद्ध मनोवैज्ञानिक उपन्यास है 'अकेली आवाज'।

कथानक का सारांश

इस उपन्यास का मुख्य पात्र बारह वर्षीय बंटू है। वह जिल्ला कलेक्टर आशुतोष मुकर्जी का बेटा है। इकलौती संतान होने के कारण माता –पिता द्वारा अत्यधिक लाड प्यार से पाला गया बंटू बहुत शरारती था।" पूरे घर में था भी वही अकेला। इकलौता लड़का घर में पूरे लाड़ –प्यार से पला।"[1] भारत को आजादी मिलने के साथ ही, ब्रिटिश सरकार के अधीन उच्च पदों पर कार्यरत लोगों को कलेक्टर बनने का अवसर मिला। श्री आशुतोष मुकर्जी अपने काम को बहुत ही निष्ठा और सटीकता से करनेवाले व्यक्ति थे, इसलिए उन्हें भी कलेक्टर बनने का अवसर प्राप्त हुआ। बेहद कड़े और अनुशाशनप्रिय होने के कारण,जहां कहीं भी समस्याएं होती थीं,उन्हें वहां जाना पड़ता था। बार –बार होनेवाले तबादलों के कारण बंटू को स्कूल में दाखिला दिलाने में व्यावहारिक कठिनाईयां आ रही थीं, इसलिए माता –पिता ने उसे घर पर ही पढ़ाने का निर्णय लिया। इस निर्णय के पीछे एक ओर कारण भी था कि स्कूल में खराब आचरण करने वाले छात्र भी हो सकते हैं,जिनकी संगति में आकर बंटू का स्वाभाव भी बिगड़ न जाए। "आशुतोष मुकर्जी ने कहा था –"स्कूल में ओर लड़के भी होते हैं। वे बंटू को परेशान कर सकते हैं। फिर सारे लड़के एक जैसे नहीं होते। बंटू सभी तरह के लड़कों के साथ उठेगा –बैठेग। इससे उसकी आदतें भी खराब होंगी। मैं चाहता हूँगी कि मेरे बेटे को घर पर ही आलिशान शिक्षा दी जाए।"[2] अतः माता –पिता ने बंटू को घर पर पढ़ाने के लिए एक अनुभवी शिक्षिका को नियुक्त किया। लगभग पांच –छह वर्षों से बंटू को पढ़ाने के कारण नीता मिस उस परिवार की एक सदस्य जैसी ही बन गयी थीं। जब बंटू पांच– छह साल का था,तब नीता मिस इस घर में आई थीं। बंटू को पढ़ाई में बिलकुल भी रुचि नहीं थी। इसलिए वह तरह –तरह से मिस को परेशान करता रहता था। हर दिन वह पढ़ाई से बचने के लिए कोई न कोई बहाना ढूंढ लेता था। दिन –ब –दिन उसका व्यवहार ओर भी खराब होता जा रहा था। उसके बाल मन पर बन्दूक की नोक पर लखपति बने एक डाकू की कहानी का गहरा असर पड़ा था। उसने गलत समझ लिया था कि किसी भी तरह से धन इकट्ठा करने से इंसान बड़ा बन जाता है। नीता मिस ने उसकी इस गलतफहमी को दूर करने की कोशिश की। उन्होंने उसे यह समझाने का प्रयास किया कि शिक्षा और अच्छा चरित्र ही किसी व्यक्ति को सम्मानित बनाते हैं। लेकिन उसने इसे समझने की कोशिश नहीं की।

आखिरकार, नीता मिस ने उसके हाथ से डाकू की वह कहानी की किताब जबरदस्ती छीन ली और उसे फाड़ दिया। बंदु गुस्से को बर्दास्त नहीं कर पाया और उसने अपने पास रखा कांच का पेपरवेट उठाकर फेंक मारा। वह पेपरवेइट सीधे नीता मिस के सिर पर जा लगा, जिससे उनके सिर से खून बहने लगा। यह देखकर बंटू बुरी तरह डर गया और वहां से भागकर बगीचे में चला गया।" मुकर्जी साहब से न रहा गया। उन्होंने दो चांटे जोर से उसके गले पर जड़ दिए ओर वहां से चले गए। सबको यह आदेश दे दिया गया कि कोइ भी व्यक्ति बंटू से बात नहीं करेगा। उसे एक कमरे में बंद कर दिया गया और कमरे के सामने कड़ा पहरा बैठा दिया गया।"[3] इस घटना के बाद बंटू के माता –पिता की सोच में बदलाव आने लगा। नीता मिस के सुझाव पर,उसके पिता मुकर्जी साहब ने उसका दाखिला रामगढ़ के आदर्श विद्यालय में करवा दिया। आदर्श विद्यालय में प्रवेश लेने के पहले ही दिन से बंटू नियमों को तोड़कर परेशानियां खड़ी करने लगा।

उसने अपने रूम पार्टनर मनोज के गाल पर थप्पड़ मार दिया और जब वार्डन ने उससे माफी मांगने को कहा,तो उसने साफ मना कर दिया। गुस्सा और अकेलापन महसूस होने पर वह अन्य छात्रों को परेशान करने लगा। साथ ही, स्कूल के नियमों के खिलाफ जाकर वह जोर – जोर से बोलने, गुस्सा करने और जिद करने लगा। उसे नए स्कूल में बहुत अकेलापन महसूस हो रहा था।" चीखना चाहकर भी वह नहीं चीख सका यहां कौन है जो उसकी सुनेगा। घर में होता तो वहां के सभी लोग उसकी बात मानते।"[4] रात में उसे अपनी नीता मिस की याद आई। उसका मन जल्द से जल्द अपने घर, माता–पिता और नीता मिस के पास वापस जाने के लिए तड़प उठा। "उसे पहली बार पश्चाताप हुआ। नीता मिस के साथ उसने कभी अच्छा व्यवहार नहीं किया। इसके बावजूद उसकी माँ ने हमेशा उसी का साथ दिया। नीता मिस भी कितने सहज ढंग से सब भूल जाती थी। "[5] उसने सोचा कि यदि वह इस स्कूल के नियमों को लगातार तोड़ता रहेगा,तो उसे स्कूल से निकाल दिया जाएगा,और वह अपने घर जा सकेगा।

विद्यालय के नियमों के अनुसार, सभी कक्षाओं के कैप्टनों में से पांच छात्रों को विद्यार्धी परिषद् के लिए चुना जाता था। उन्हें जूरी या न्यायाधीश कहा जाता था। इस वर्ष मुख्य न्यायाधीश बंटू की कक्षा का हरकिशन था। विद्यार्थी परिषद् की बैठक सप्ताह में एक बार होती थी। इसी बैठक में अगले सप्ताह की कार्य योजना तय की जाती थी। नियम तोड़नेवाले छात्रों को क्या सजा दी जानी चाहिए, इसका फैसला भी यही जूरी करती थी। उनकी मदद के लिए प्रिंसिपल और शिक्षक भी मौजूद रहते थे। बंटू के लिए यह बिलकुल नया अनुभव था। सुबह कसरत करने के लिए मनोज ने बंटू को बुलाया, लेकिन उसने जागने से मना कर दिया। तब कैप्टन ने बंटू को लाने के लिए गिरीश नामक एक छात्र को भेजा। वह छात्र बंटू से अधिक लम्बा, हट्टा–कट्टा और सांवले रंग का था। उसने आते ही बंटू का कम्बल हटा दिया और कड़े शब्दों में उसे उठने का आदेश दिया। बंटू को ऐसा लगा मानो उसकी नींद खराब करने के लिए कोई दैत्य आ गया हो। वह तुरंत उठा और कसरत करने के लिए मैदान की ओर दौड़ पड़ा। स्कूल में दाखिला लेने के पहले ही सप्ताह की विद्यार्धी परिषद् की बैठक में, नौवीं कक्षा के कैप्टेन ने उसके खिलाफ दो शिकायतें दर्ज कराई। पिछले दिन बंटू शाम की प्रार्थना में शामिल नहीं हुआ था। विद्यार्धी परिषद् ने इसके लिए उसे सजा सुनाई –बंटू को एक सप्ताह तक सन्ध्या प्रार्थना के समय गणित के सवाल हल करने होंगे। जब बंटू ने इसके खिलाफ अपना विरोध जताने के लिए खड़े होने की कोशिश की,तब मनोज ने पीछे से उसे पकड़कर बैठा दिया। बंटू ने इसका बदला लेने के लिए अपनी कमीज से एक आलपिन निकाली और मनोज के हाथ में चुभो दी। अचानक हुए इस दर्द के कारण मनोज चीख पड़ा। इसकी सजा के तौर पर प्रिंसिपल ने फैसला सुनाया कि कोई भी दो दिनों तक बंटू से बात नहीं करेगा।" प्रिंसिपल ने सजा सुना दी –'दो दिन कोई बंटू से नहीं बोलेगा।"[6] वह पूरी तरह से अकेला पड़ गया था। प्राचार्य का निर्देश होने के कारण कोइ भी उससे बात करने को तैयार नहीं था।" यह बात उसे अजीब लगी कि दो दिन तक कोई उससे नहीं बोलेगा। ३३३.. यह पहली बार उसने अनुभव किया कि वह अकेला है। यह अकेलापन उसे काटने लगा।"[7] इसबार यह अकेलापन उसके लिए असहनीय हो गया था। यहां तक कि उसका रूम मेट मनोज भी उससे बात करने को तैयार नहीं था,जिससे उसे लगा कि सब उससे घृणा करते हैं।" ये सब मुझे भूल गए। 'बंटू ने अपने आपसे कहा। वह सोचने लगा,मुझमें ऐसा क्या दोष है ? क्यों लोग मुझसे घृणा करते हैं ?'"[8] जब यह अकेलापन असहनीय हो गया,तो वह फूट–फूट कर रो पड़ा।" बंटू थोड़ी देर अपलक देखता रहा और फिर उसकी आंखों में आंसू आ गए। वह वहीं बैठ गया और फफक –फफककर रोने लगा।"[9] प्रार्थना के समय वह गणित के सवाल हल कर रहा है या नहीं, इस पर नजर रखने के लिए प्रिंसिपल ने गिरीश को काम पर लगाया था। बंटू को यह बात बिलकुल पसंद नहीं आयी। बंटू ने कई तरह से गिड़गिड़ाकर, मिन्नतें करके और यहां तक कि धमकाकर भी उसे वहां से हटाने की पूरी कोशिश की। लेकिन वह लड़का नहीं माना। आखिरकार बंटू ने अपनी अलमारी में रखी किमाच का एक फल निकाला और उसके पैर पर रगड़ दी। वह बेचारा लड़का अपने दोनों पैर खुजलाते हुए वहां से भाग गया। गणित के शिक्षक चश्मा पहनते थे,इसलिए बंटू ने उनका उपनाम 'p' मुद्दीन 'रख दिया। जल्द ही स्कूल के सभी छात्रों को इस नाम के बारे में पता चल गया।

बंटू वहां के माहौल में बिलकुल भी ढ़ल नहीं पा रहा था। एक दिन उसने हॉस्टल का नियम तोडा और आधी रात को अपने कमरे की लाइट जलाकर अपने पिता को पत्र लिखा। उस पत्र में उसने प्रिंसिपल, शिक्षकों और छात्रों,सभी के बारे में शिकायत की। उसने जल्द से जल्द अपने घर वापस लौटने की अपनी तीव्र इच्छा व्यक्त की। अगले दिन प्रिंसिपल ने बंटू को अपने कमरे में बुलाया। वहां वार्डेन अपर्णा सेन और गिरीश भी मौजूद थे। प्रिंसिपल ने बंटू को हॉस्टल के नियम समझाने की कोशिश की और साथ ही उसे उस सांवले लड़के से माफी मांगने के लिए कहा। लेकिन बंटू इसके लिए तैयार नहीं था।" बंटू मूक खड़ा रहा। उसका सिर उसी तरह झुका हुआ था। अब उसकी आँखें भर आई थीं। एकाएक उनमें आंसू आ गए और वे नीचे गिरने लगे।"[10] सुबह घुड़सवारी के दौरान,उसने आशा नाम की एक छात्रा को घोड़े की पीठ से नीचे गिरा दिया। अपनी अंधी संगीत शिक्षिका को लेकर भी गलतफहमी पाल राखी थी,लेकिन बाद में उसे समझ आया कि वे सचमुच अंधी थीं। इस बात पर उसे बहुत पछतावा हुआ। रेखा मिस ने बंटू के मधुर गायन की प्रशंसा की,जिसे सुनकर वह बेहद खुश हुआ। अगली विद्यार्थी परिषद् की बैठक में भी बंटू के खिलाफ शिकायतें उठ। जूरी के सदस्यों ने इस मामले में प्रिंसिपल से सलाह मांगी। प्रिंसिपल ने कहा कि यह बंटू की गलती नहीं बल्कि उसके माता –पिता की गलती है,इसलिए वह सजा का हकदार नहीं है। यह सुनकर बंटू को बहुत दुःख हुआ। उसे लगा कि इससे बड़ा अपमान उसके लिए और कुछ नहीं हो सकता।" बंटू को लगा,इससे बड़ा उसका अपमान और कुछ नहीं हो सकता। इससे बड़ी दूसरी सजा नहीं हो सकत। उसके लिए आगे के सारे दरवाजे बंद कर दिए गए हैं। वह ऐसे विद्यालय में अब नहीं रह सकेगा। वह अपने पिता को लिख देगा कि यहाँ उन्हें तक अपराधी कहा जाता है। वह इसे सहन नहीं करेगा।"[11] उसी रात बंटू ने अपने पिता को पत्र लिखा। उसके रूममेट मनोज को यह देखकर बहुत दुःख हुआ, क्योंकि उसके पिता का देहांत हो चुका था। उसने अपनी डायरी खोली और उसमें बंटू के बारे में लिखा –'भले ही मेरा रूम मेट बंटू थोड़ा जिद्दी है, लेकिन मुझे पूरा भरोसा है कि एक दिन वह बहुत बड़ा आदमी बनेगा। श्जब मनोज बाथरूम गया,तब बंटू ने इसे पढ़ लिया और यह जानकर वह बेहद खुश हुआ। अगले दिन शाम को बंटू बाजार गया,जहां वार्डेन ने उसे देख लिया। वे उसे वापस हॉस्टल ले आए और बंटू ने अपनी गलती के लिए खेद व्यक्त किया। इस तरह धीरे –धीरे बंटू में सकारात्मक बदलाव दिखने लगे।

पहले से तय योजना के अनुसार, 40 छात्र कश्मीर और श्रीनगर की यात्रा पर निकले। इस दल में वार्डेन,गणित के शिक्षक और अन्य अध्यापक भी शामिल थे। यात्रा के दौरान भी बंटू ने कई शरारतें की। गणित के शिक्षक का कम्बल भीग जाने का दोष गिरीश पर आ गया। बंटू द्वारा पकड़ी गयी मछली को पानी में फेंकने वाली मोहिनी की गुथी हुई चोटी को काटकर बंटू ने नदी में फेंक दिया। घुड़सवारी के दौरान, अतीत में खुद को घोड़े से

गिराए जाने का बदला लेने के लिए, आशा ने बंटू को घोड़े से नीचे गिरा दिया। लेकिन बंटू को दर्द में देखकर उसने उससे माफी मांग ली। यात्रा के कारण जहां बाकि सभी लोग खुश थे, वहीं बंटू के लिए यह केवल दर्द भरा अनुभव रहा। यात्रा से वापस लौटने पर उसे घर से एक पार्सल मिला वह उसके लिए जन्मदिन का केक और उपहार थे। उसका जन्मदिन हॉस्टल में मनाया गया,जिसने बंटू को बहुत खुशी दी। मनोज के लिए यह बहुत बड़े आश्चर्य की बात थी। उसके पिता का निधन हो चुका था और परिवार में केवल उसकी माँ और बहन ही थे। वे साधारण लोग थे, इसलिए कभी जन्मदिन नहीं मनाते थे। यह बात समझकर बंटू ने मनोज को एक सरप्राइज देने का फैसला किया। उसने मनोज को बताए बिना उसके जन्मदिन के जश्न की तैयारी कर ली। उसने एक पत्र भी लिखकर रखा,जिसमें ऐसा दिखाया गया था कि उसकी माँ और बहन ने मिलकर उसके लिए यह केक और जन्मदिन कि पोशाक तैयार की है।

अगली विद्यार्थी परिषद् में भी बंटू के खिलाफ तीन आरोप लगाए गए। टूर पर जाने से पहले अकेले बाजार जाना, श्रीनगर में गणित के शिक्षक का कम्बल गीला करना और पहलगाम में मोहिनी गुप्ता के बाल काटना। जूरी ने बंटू से पूछा कि क्या उसे इन आरोपों के सम्बन्ध में कुछ कहना है। बंटू ने जवाब दिया कि वह इस स्कूल में पढ़ना नहीं चाहता। जूरी के सदस्यों ने आपस में चर्चा की और इन गलतियों के लिए सजा भी सुनाई। पहली गलती के लिए वार्डेन से माफी मांग लेने के कारण सजा माफ कर दी गयी। गणित के शिक्षक का कम्बल गीला करने की सजा के रूप में जूरी ने उसे दो सप्ताह तक चौकीदार का काम करने का निर्देश दिया। लेकिन बंटू इसके लिए तैयार नहीं था। इस लिए जूरी ने एक और फैसला लिया। बंटू को एक हफ्ते के लिए पॉकेट मणि नहीं दी जाएगी। मोहिनी गुप्ता के बाल काटकर बंटू ने पूरे महिला समाज का अपमान किया है, इसलिए जूरी ने बंटू को स्कूल की सभी छात्राओं से माफी माँगने का निर्देश दिया। बंटू इसके लिए भी तैयार नहीं हुआ,इस लिए जूरी ने उसे एक हफ्ते के लिए घुड़सवारी,संगीत और सामूहिक भोजन से दूर रखने का फैसला सुनाया यइसके बजाय उसका खाना उसके कमरे में ही पहुंचाया जाएगा। उस रात सोने से पहले बंटू ने अपने पिता को फिर से एक पत्र लिखा। उसने उसमें जिक्र किया कि उसे इस स्कूल में आगे पढ़ाई करने में कोई दिलचस्पी नहीं है और अगर उसे यहां रहने के लिए मजबूर किया गया,तो वह कहीं और भाग जाएगा। उसने पत्र लिखा और स्कूल के नियमों के अनुसार उस पत्र को प्रिंसिपल को सौंप दिया। यह जानकर प्रिंसिपल ने उसे अपने घर बुलाया,उसे प्यार से सब कुछ समझाया और सोच –समझकर फैसला लेने की सलाह दी। लेकिन बंटू ने प्रिंसिपल को साफ बता दिया कि वह अपने फैसले से पीछे नहीं हटनेवाला है और स्कूल छोड़ने के अपने फैसले पर अड़ा हुआ है।

अकेलापन बहुत दर्दनाक होता है,यह बात बंटू को एक हफ्ते की सजा से समझ आ गयी थी। अगले दिन मनोज का जन्मदिन है। अपने जन्मदिन के दिन मनोज इस पार्सल को देखकर हैरान रह गया। वह बहुत खुश हुआ। केक काटने के बाद,उसने जन्मदिन के कपड़े पहने और बटु और आशा के साथ मैदान में खेलने चला गया। तभी अचानक बारिश होने लगी। बंटू और आशा तो दौड़कर कमरे में चला गया,लेकिन मनोज खुशी के मारे बारिश में भीगता रहा। इसके बाद,वह अपने जन्मदिन के कपड़ों को सुखाने के लिए पंखे के नीचे खड़ा हो गया। मनोज ने अपने मिले उपहारों के लिए धन्यवाद देते हुए अपनी माँ को एक पत्र लिखा। आधी रात होते –होते मनोज को तेज बुखार आ गया। बंटू ने वार्डेन को सूचित किया और मनोज को अस्पताल भर्ती कराया। बंटू को बहुत दुःख हुआ क्योंकि उसे लगा कि उसकी वजह से ही मनोज को बुखार आया है। उसने सोचा कि जब मनोज की माँ को पत्र मिलेगा और अगर उन्होंने मना कर दिया कि केक और कपड़े उन्होंने नहीं भेजे हैं, तो मनोज को बहुत बड़ा झटका लगेगा। मनोज को खुशी देने के लिए ही उसने ऐसा किया था और वह चाहता था कि इस बात का पता किसी ओर को न चले। इसलिए बंटू ने मनोज की माँ को एक पत्र लिखा और साथ ही मनोज के बुखार के बारे में भी बताया। उस रात बंटू सो नहीं सका। अगली सुबह वह अस्पताल गया और मनोज के स्वास्थ्य के बारे में जानकारी ली।

अगले दिन बुलाई गयी विद्यार्थी परिषद् में अंतर्राष्ट्रीय टूर्नामेंट में भाग लेनेवाले छात्रों की सूची में बंटू का नाम भी शामिल था। बंटू को क्रिकेट टीम का कप्तान चुना गया। मनोज का स्वास्थ्य खराब होने के कारण बंटू का मन उसे अकेला छोड़कर जाने का नहीं कर रहा था। लेकिन मनोज ने बंटू से कसम खिलाई कि वह टूर्नामेंट में भाग लेगा और पुरस्कार जीतकर ही लौटेगा। टूर्नामेंट में बंटू ने बहुत अच्छा प्रदर्शन किया और टीम जीत गयी। इस तरह बंटू सबका चहेता बन गया। टूर्नामेंट के बाद जब वे वापस लौटे, तो स्कूल में उनका भव्य स्वागत किया गया। उसी शाम मनोज ने बताया कि उसकी माँ और बहन कल उससे मिलने आ रहे हैं। यह सुनकर बंटू के मन में बहुत डर पैदा हो गया अगले दिन माँ और बहन से मिलकर बंटू ने सारी बात सच –सच बता दी। उसने कहा कि उसने यह सब अपने दोस्त की खुशी के लिए किया है। जब प्रिंसिपल को सच्चाई का पता चला,तो उन्हें भी बंटू पर बहुत गर्व महसूस हुआ। अगली विद्यार्धी परिषद् में प्रिंसिपल ने सारी बात जूरी को बताई,जिसके बाद बंटू सबका और भी प्रिय बन गया। विद्यार्थी परिषद् के मुख्य न्यायाधीश ने बंटू की सराहना की और कामना की कि भविष्य में बंटू उनका नेतृत्व संभाले। लेकिन तभी बंटू ने घोषणा की कि वह यह स्कूल छोड़कर जा रहा है यह सुनकर सब लोग दुखी हो गए। आदर्श विद्यालय के सभी छात्रों ने एक –एक करके बंटू के पास आकर उससे अपने फैसले पर पुनःविचार करने का प्यार भरा अनुरोध किया। जब मुकर्जी साहब को अपने बेटे का पत्र मिला,जिसमें उसने वापस लौटने की इच्छा जताई थी,तो वे बंटू को लेने के लिए विद्यालय पहुँचे। उनके साथ बंटू की माँ और नीता मिस भी थीं। प्रिंसिपल सहित आदर्श विद्यालय के सभी लोगों को बंटू की इतनी तारीफ करते देख,उन माता –पिता का दिल खुशी से भर गया। अंततः बंटू ने इसी विद्यालय में अपनी पढ़ाई जारी रखने का फैसला किया। इसके बाद नीता मिस द्वारा दिए गए टॉफियों का एक बड़ा पैकेट उसने सभी के साथ बांटकर खाया।

संक्षेप

अकेलापन, मानव जीवन की सबसे दुखद स्थिति है। सब कुछ होने और सबके होने के बावजूद भी जीवन में अकेलापन का सामना करनेवाले लोग बहुत हैं। विशेष रूप से आधुनिक युग में। स्कूल के शुरूआती दिनों में बंटू को बहुत अकेलेपन का अनुभव हुआ। अपने कमरे को किसी और के साथ शेयर करने की बात सोचना भी उसके लिए मुश्लि था। अपने रूम मेट मनोज के प्रति उसका व्यवहार इसी बात को साबित करता है। बचपन में अकेले रह जाने के कारण ही उसे स्कूल में दूसरों के साथ घुलने –मिलने में कठिनाई महसूस हुई। उसकी कई हरकतें इसी अकेलेपन का परिणाम थीं। उसने स्कूल में सीखा कि मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है और हर किसी को अकेले –अकेले नहीं बल्कि समाज के साथ मिलकर रहना चाहिए। इसके साथ ही उसके जीवन में बदलाव आए और वह सबके साथ सहयोग करने तथा सबकी मदद करते हुए जीने के योग्य बन गया।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. राजेंद्र अवस्थी, अकेली आवाज, 2010 राजपाल एंड सनज, कश्मीरी गेट, दिल्ली, पृ .07

2. राजेंद्र अवस्थी, अकेली आवाज, 2010, राजपाल एंड सनज, कश्मीरी गेट, दिल्ली, पृ.08
3. राजेंद्र अवस्थी, अकेली आवाज, 2010, राजपाल एंड सनज, कश्मीरी गेट, दिल्ली, पृ .19
4. राजेंद्र अवस्थी, अकेली आवाज, 2010, राजपाल एंड सनज, कश्मीरी गेट, दिल्ली, पृ.28
5. राजेंद्र अवस्थी, अकेली आवाज, 2010, राजपाल एंड सनज, कश्मीरी गेट, दिल्ली, पृ.28
6. राजेंद्र अवस्थी, अकेली आवाज, 2010, राजपाल एंड सनज, कश्मीरी गेट, दिल्ली, पृ .44
7. राजेंद्र अवस्थी, अकेली आवाज, 2010, राजपाल एंड सनज, कश्मीरी गेट, दिल्ली, पृ .46
8. राजेंद्र अवस्थी, अकेली आवाज,2010 राजपाल एंड सनज, कश्मीरी गेट, दिल्ली, पृ.48
9. राजेंद्र अवस्थी, अकेली आवाज,2010 राजपाल एंड सनज, कश्मीरी गेट, दिल्ली, पृ.48
10. राजेंद्र अवस्थी, अकेली आवाज,2010 राजपाल एंड सनज, कश्मीरी गेट, दिल्ली, पृ.60
11. राजेंद्र अवस्थी, अकेली आवाज,2010 राजपाल एंड सनज, कश्मीरी गेट, दिल्ली, पृ.70